P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-VIII April-2015
E: ISSN NO.: 2349-980X

मान्यवर काँशीराम : एक परिचय

सारांश

काँशीराम का जन्म 15 मार्च 1934 को पंजाब के रापण जिले में स्थित खवासपुर गाँव में हुआ था। माता का नाम बिशन सिंह कौर और पिता हरि सिंह थे। ये लोग वर्णाश्रम व्यवस्था के तहत शूद्र जाति से थे तथा व्यवसाय के रूप मे कृषि कार्य से सम्बन्धित था। काँशीराम के चार भाई और तीन बहनें थी जिसमें वे ज्येष्ठ थे। आर्थिक रूप से पिछड़े हुए दलितों के अपेक्षा हरी सिंह का परिवार सम्पन्न माना जाा सकता था। मान्यवर काँशीराम की प्रारम्भिक शिक्षा सरकारी प्राइमरी स्कूल मलकपुर से हुई और पांचवी से आठवीं की शिक्षा इस्लामियां स्कूल रोपड़ में हुई। इसी क्रम में महाविद्यालीय शिक्षा (बी0एस0सी0) रोपड़ सरकारी कालेज से हुई। काशी राम जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन बहुजन समाज के सर्वांगीय विकास के लिए समर्पित कर दिया।

मुख्य शब्द : जातिवाद, बहुजन समाज, डी0एस0फोर, गुरूकुंजी

रवीन्द्र कुमार
अध्यक्ष,
इतिहास विभाग,
सेन्ट एण्ड्रयूज कालेज,
गोरखपुर

प्रस्तावना

अपने छात्र जीवन के संदर्भ में काँशीराम का कहना था कि ''मैं स्वयं जातिवाद का शिकार तो नहीं हुआ किंतु मेरे इर्दगिर्द ऐसे तमाम लोग थे जो विषमता वादी व्यवस्था के शिकार होने के कारण दयनीय अवस्था में थे और जिन पर जुल्म इस कारण से किया जाता था कि वे निरक्षर, गरीब और तथाकथित वर्णव्यवस्था के शिकार थे। ये सब देखकर मन निरन्तर कुंठित व खीजपूर्ण होता रहा। 1956 में काँशीराम न देहरादून के भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण विभाग में नौकरी की।

इसी वर्ष 6 दिसम्बर 1956 को डॉ0 भीमराव अम्बेडकर का महापरिनिर्वाण हुआ। इस दुःखद समाचार को सुनकर काँशीराम के करीबी श्री गैनी महोदय तीन दिनों तक गमगीन रहे परिणाम स्वरूप काँशीराम डॉ0 अम्बेडकर के बारे में उत्सुक हुए और 22 वर्ष की अवस्था में डॉ0 अम्बेडकर के व्यक्तित्व से रूवरू हुए। इसी बीच 1957 में पूना के सेन्ट्रल इन्सिट्यूट ऑफ मिलिटरी एक्सपलोसिव में संशोधन अधिकारी पर कार्यरत हो गये। यह वही शहर था जहाँ 24 सितम्बर 1932 का महात्मा गाँधी और डॉ0 अम्बेडकर के बीच पूना समझौता हुआ था।

पूना में, नौकरी करते हुए 1963–64 में एक ऐसी घटना घटी जिससे काँशीराम के जीवन में एक नया मोड़ आया। जिस प्रतिष्ठान में काँशीराम जी कार्य करते थे वहाँ पर महात्मा बुद्ध की जयंती एवं डॉ0 भीमराव अम्बेडकर जयंती के अवसर पर अवकाश दिया जाता था, किंतु 1963 के अंतिम माह में जब अवकाश निर्धारण किया जा रहा था तब विभाग के उच्च अधिकारियों द्वारा उक्त छुट्टियों रद्द करवा कर बाल गंगाधर तिलक जयंती व दीपावली में एक दिन का अतिरिक्त अवकाश शामिल कर दिया। जिसके कारण प्रतिष्ठान में कार्यरत समस्त दलितों की भावनाओं को ठेस पहुँची, किंतु कोई भी वरिष्ठ अधिकारियों के भय के कारण विरोध का साहस नहीं कर पायें परन्तु 'दिनाभाना' नामक चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी ने विरोध किया जिसके परिणाम स्वरूप उसे वर्क्स कमेटी से बाहर कर दिया गया। परिणाम स्वरूप दिनामाना ने विभाग के अनुमति के बगैर न्यायालय की शरण लिया और उसके इस दुस्साहस के लिए नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया। दिनामाना उसी विभाग में था जहाँ काँशीराम कार्यरत थे। दिनामाना के विरूद्ध एकपक्षीय कार्यवाही देखकर मान्यवर काँशीराम व्यथित हो उठे और सभी दलित कर्मचारियों को एकजुट करने का कार्य किया तथा पत्राचार के माध्यम से वरिष्ठ अधिकारियों से अपने असंतोष को व्यक्त करते हुए सम्बन्धित के प्रकरण में विधिक सलाह ली। अंततोगत्वा दलित कर्मचारियों के भारी दबाव के कारण रक्षा मंत्रालय से दिनाभाना को न्याय दिलवाने में कामयाबी मिली और पूर्ववत अवकाश लागू हुआ।

इस सम्पूर्ण प्रकरण के कारण काँशीराम को डॉ0 अम्बेडकर के जीवनवृत्ति के विषय में और भी जानने की उत्सुकता हुई। ऐसे में विभागीय श्री डी0के0 स्वांपर्डेजी ने डॉ0 अम्बेडकर द्वारा लिखित पुस्तक ॲनीहिलेशन आफ

कॉस्ट दिया जिसके अध्ययन के उपरान्त वे डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के जीवन और मिशन को गहराई से समझ सके। उनके हृदय से विद्यमान व्यवस्था के विरूद्ध अग्नि प्रज्जवलित हुई। काँशीराम ने इसी दरमियान महात्मा ज्योतिवा फूले और छत्रपति शाहू जी महाराज के कार्यो का भी सूक्ष्म अध्ययन किया।

काँशीराम इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सदियों से ब्राह्मणवादी व्यवस्था का लाभ समाज के सिर्फ विशिष्ट वर्ग को प्राप्त हो रहा है और शेष इस लाभ से वंचित है जो संख्या में लगभग पचासी प्रतिशत है। शष पन्द्रह प्रतिशत इस देश के शासन और प्रशासन पर जाति क अनुसार काबिज है। इस व्यवस्था को तोड़ने के लिए डॉ0 अम्बेडकर के अलावा अन्य कई महापुरूषों ने भी अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया किंतु वर्तमान परिवेश में यह व्यवस्था और भी विकराल रूप धारण कर चुकी थी।

अतः वर्तमान परिस्थितियों की भयावहता को देखते हुए काँशोराम संघर्ष के लिए उद्यत हुए, क्योंकि डॉ0 अम्बेडकर के बाद उनके मिशन, उनके संघर्ष और उनके सपनों को आगे ले जाने की जिम्मेवारी जिन पर थी वे अपनी–अपनी डफली और अपना–अपना राग अलाप रहे थे। बहुसंख्यक समाज की इस अज्ञानता और व्याप्त अंधकार ने काँशीराम जी का अंदर ही अंदर आंदोलित कर दिया।

सूक्ष्म अध्ययन के बाद मान्यवर काँशीराम इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि बहुसंख्यक दलित समाज जाति–उपजाति के आधार पर छोटे–छोटे टुकड़ों में बंटा है और प्रत्येक टुकड़ा एक अल्पजन समाज है जो अकेले अपने अधिकारों को प्राप्त करने में असमर्थ है। वे समझ गये कि जब तक ये अल्पजन या अल्पसंख्यक समाज आपस में एक जुट होकर बहुजन समाज में परिवर्तित नहीं हो जाते तब तक उन्हें देश के शासन और प्रशासन में भागीदारी नहीं प्राप्त होगी। उन्हें सम्मानपूर्ण जिन्दगी जीने का अवसर कदापि नहीं प्राप्त होगा। अतः ऐसा साचकर सोये हुये समाज को जागृत करने के लिए अपने आपको सम्पूर्ण समर्पित करने का निर्णय लिया।

यह वही वक्त था जब मान्यवर काँशीराम के माता–पिता उन्हें वैवाहिक बंधन में बांधने की तैयारी कर रहे थे। मान्यवर काँशीराम जी सरकारी नौकरी में ऊँचे पद पर थे जहॉ से व अच्छा वेतन प्राप्त करते थे और आराम से जिन्दगी गुजार सकते थे, किन्तु अपने बहुजन समाज के हितों के सवर्द्धन और सुरक्षा को दृष्टि में रखते हुए काँशीराम ने अपना जीवन दॉव पर लगा दिया और विन्नमतापूर्वक सारे पारिवारिक सम्बन्धों को भी तोड़ लिया। पिता हरि सिंह के देहवासन पर भी वे अपने घर नही गये। इसी प्रकार सोये हुए बहुजन दलितों को उनके अधिकारों को दिलाने के लिए कृत संकल्प हुए। डॉ0 अम्बेडकर ने उन दलितों बधुओं की आलोचना करते हुए कहा था कि ''मुझे पढ़े–लिखे लोगों ने धोखा दिया है'' जिन्होंने सरकारी सहूलियतों को प्राप्त करके अपने दलित समाज के लोगों से उपेक्षापूर्ण व्यवहार किया। अतः काँशीराम जी ने सर्वप्रथम इसी वर्ग अर्थात् पढ़े–लिखे दलित लोगों को जिन्होंने सरकारी सहूलियतों के माध्यम से कुछ धन अर्जित कर लिया था किन्तु अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों से विमुख थे, को संगठित करने का कार्य किया। इसके लिए मान्यवर काँशीराम ने साइकिल से सरकारी व गैर सरकारी दफ्तरों में कार्यरत बहुजनों से सम्पर्क करना शुरू किया ताकि अखिल भारतीय स्तर पर एक संघटन खड़ा किया जा सके। इसके लिए मान्यवर काँशीराम जी ने दिन को दिन नहीं, रात को रात नहीं समझा, निरन्तर कार्य किया।

1972 में ''सिवर एम्पलाइज प्रॉब्लेम एण्ड देयर सोल्यूशन'' विषय पर एक सेमीनार आयोजित किया। कर्मचारियों की एक राष्ट्रीय स्तर की संस्था हो इसके लिए काँशीराम ने बैकवर्ड एण्ड मायनारिटी कम्युनिटीज एम्प्लाईज फेडरेशन' का गठन किया और लोगों को शिक्षित बनो, संगठित बनो, संघर्ष करो का नारा बुलन्द किया। संगठन को मजबूत करने के लिए अनेक कर्मचारी संगठनों से मुलाकात की और 06 दिसम्बर 1973 को दिल्ली में पचकुइया हॉल में बैठक बुलायी जिसमें सैकड़ों लोगों ने भाग लिया और इस बैठक में बामसेफ (Pay Back to the Society) का खाका तैयार किया गया। इसे नान पोलिटकल, नॉन एजिटेशनल और नान रिलीजियस बनाये रखने का संकल्प किया गया और यह तय किया गया कि जब सम्पूर्ण भारत से कम से कम दो लाख कर्मचारी होने पर इसकी विधिक स्थापना होगी आर इसका अस्थायी कार्यालय दिल्ली में श्रम मंत्रालय में कार्यरत सेक्शन अफसर श्री दौलतराव बांगर के निवास में खोलने की बात की। बामसेफ को अखिल स्तर का दर्जा दिलाने के लिए वे लगातार भारत के कोने–कोने का भ्रमण करते रहे, इसके लिए किराये की साइकिल से भ्रमण किया। कभो–कभी साइकिल का किराया भी देने को पैसे नहीं होते थे। उनका यह मानना था कि ''दिल में अगर सही तमन्ना है तो रास्ते निकल आते हैं, तमन्ना अगर सही नहीं है तो हजारों बहानें निकल आते है।''

06 दिसम्बर 1978 को दिल्ली में वामसेफ की विधिवत स्थापना तक इस संगठन म दो लाख से अधिक कर्मचारी शामिल थे और इसका पहला सम्मेलन 7 दिसम्बर से 10 दिसम्बर 1978 को हुआ। यह बामसेफ अब ब्रेन बैंक, मनी बैंक और टैलेण्ट बैंक के रूप में आ गया था और 14 अप्रैल 1979 को ''विल अम्बेडकरीज्म रिवाइज एण्ड सर्वाइव''? विषय पर देश के 10 शहरों में सेमीनार हुए जिसके परिणाम स्वरूप तथाकथित सुविधाभोगी अम्बेडकर वादियों में खलबली मच गई और युवा दलित काँशीराम के पीछे अपना नेता मान कर हो लिये। 2 दिसम्बर से 4 दिसम्बर 1979 को नागपुर के राष्ट्रीय अधिवेशन में मान्यवर काँशीराम ने कहा कि ''भारतोय लोकशाही कुछ और नहीं अपितु अमीर लोगों के नोटों द्वारा गरीब लोगों के वोट हथियाना है। यह एक प्रकार की सक्रिय सामंतशाही है।'' बामसेफ का दूसरा 20 से 24 नवम्बर 1980 को दिल्ली में, तीसरा 14 से 18 अक्टूबर 1981 को चंडीगड़ में हुआ। इस अधिवेशन में पहली बार ''बामसेफ वॉलेटियर फोर्स'' सामने आया जो इस अधिवेशन का मुख्य आकर्षण था।

वामसेफ के बदलते हुए जनप्रियता से क्षुब्ध होकर ब्राहमणवादियों के दिमाग की उपज दलित पैंथर नामक एक क्रांतिकारी संगठन का निर्माण कर दलित

शोषित समाज के युवकों को थमा दिया जो जोंश में होकर महाराष्ट्र की सड़कों पर उतर आया एवं सरकारी दमन का शिकार हुआ। वस्तुतः वामसेफ का स्वरूप नान पॉलिटिकल होने के साथ–साथ नॉन–ऑजिटेशनल था अर्थात वामसेफ से सम्बन्धित व्यक्ति दलित–शोषित समाज के सृजनात्मक कार्यो को करें, उनके अधिकारों को सुरक्षित व संरक्षित करें और आंदोलनात्मक कार्यो में न उलझे अपितु यह कार्य दूसरों को सौंप दे। अतः ऐसा सोचकर 06 दिसम्बर 1981 को मान्यवर काँशीराम ने डी एस फोर (डी0एस0–4) दलित शोषित समाज संघर्ष समिति की स्थापना किया। वामसेफ के कार्यो से प्रभावित अनेक बहुजन युवक–युवतियाँ डी0एस0 फोर के सदस्य बने जिसकी अनेक प्रादेशिक इकाइयों का गठन किया गया। 18 अप्रैल 1982 को आगरा में वामसेफ और डी0एस0फोर का संयुक्त अधिवेशन हुआ। पूना पैक्ट के विरोध में मान्यवर काँशीराम ने धिक्कार कार्यक्रम करने का निश्चय किया और इसी क्रम में 24 सितम्बर 1982 में पूना से लेकर 24 अक्टूबर 1982 को जालंधर तक धिक्कार कार्यक्रम का आयोजन किया। इस पूना पैक्ट धिक्कार परिषदों के सफल आयोजन से दलित शोषित समाज में स्वालम्बन की भावना जाग्रत हुई और इन परिषदों के माध्यम से वे बुर्जुआ अम्बेडकरवादिया की धज्जियां उड़ा दी गई। ''पूना धिक्कार परिषदों' के बाद काँशीराम ने डी0एस0 फोर के लिए चार कार्यक्रम निश्चत किया।

1. सामाजिक क्रिया, जो तात्कालिक था।
2. राजनैतिक क्रिया, जो सीमित अल्पकालीन था।
3. पूना राजनैतिक क्रिया, जो दीर्घकालीन था।
4. सांस्कृतिक बदलाव एवं नियंत्रण, जो स्थायी था।

उक्त हेतु कांशीराम ने डी0एस0फोर का 'दो चक्कें और दो पांव'' आंदोलन का प्रारम्भ 15 मार्च 1983 से किया और लगभग 3200 किमी0 की यात्रा के बाद यह 24 अप्रैल 1983 को समाप्त हुआ। इसी क्रम में उत्तर प्रदेश में डी0एस0 फोर ने राज्यव्यापी शराब बंदी का कार्यक्रम चलाया जिसमें महिलाओं की सक्रिय भूमिका रही। आगे चलकर उ0प्र0 डी0एस0फोर की गतिविधियों का केन्द्र बन गया। जहॉ बामसेफ गैर राजनीतिक संस्था के रूप में दलितों के बीच पुनर्जागरण, वृद्धि, श्रम की महत्ता, अर्थ आदि के संदर्भ में मजबूती से कार्य रही थी वही डो0एस0 फोर ने राजनीतिक चेतना, आंदोलनों और चुनावी गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करके 85 प्रतिशत दलित समाज को उद्धेलित कर रहे थे और अब दलित समाज की आँखे खुल रही थी और वे डॉ0 अम्बेडकर के द्वारा कही गई सच्चाई को समझ रहे थे कि ''राजनैतिक सत्ता वह गुरू कुन्जी है जिसे हासिल करने से कोई भी ताला खोला जा सकता है।'' परन्तु इस सच्चाई को हकीकत में बदलने के लिए मान्यवर काँशीराम को एक राजनैतिक दल की आवश्यकता थी जो उनका अपना हो। ऐसा सोचकर काँशीराम ने 14 अप्रैल 1984 को बाबा साहब डॉ0 अम्बेडकर के जन्मदिवस पर बहुजन समाज पार्टी की स्थापना का ऐलान किया और बहुजन टाइम्स नामक मराठी दैनिक अखबार और दिल्ली से एक अंग्रेजी व एक हिन्दी दैनिक अखबार बहुजन टाइम्स को प्रकाशित किया। 1978 में प्रधानमंत्री मोरार जो देसाई के शासनकाल में गठित मंडल आयोग ने 3743 जातियो को पहचान कर उन्हें सामाजिक एवं आर्थिक आरक्षण देने की वकालत की थी, को बहुजन समाज पार्टी ने ''मंडल आयोग लागू करो, वरना कुर्सी छोड़ दो'' का नारा देकर पूरे भारत को हिला दिया। देश के कोने से कोने में आंदोलन चलाया गया जिसका उद्देश्य बहुजन समाज का यह समझाना था कि आजादी के 37 वर्ष बाद भी वे गुलामों जैसे क्यों है? इसी वर्ष 13 नवम्बर 1984 के लोकसभा चुनाव में भाग लिया, जिसमें उसे 10 लाख वोट प्राप्त हुए। आगे चलकर बहुजन समाज पार्टी ने ''आरक्षण हिस्सेदारी का सवाल'' विषय पर देशभर में सेमिनार किया और मंडल आयोग को लागू करने के लिए बहुजन समाज में जागृति उत्पन्न की।

कालान्तर में मान्यवर काँशीराम की शिष्या और महिला तरूण नेत्री मायावती के उदभव ने बहुज समाज पार्टी को और भी गति प्रदान की जिससे बी0एस0पी0 एक बैलेन्सिंग पावर के रूप में विशेषकर उत्तर–प्रदश में उभर कर सामने आयी और 1993 का वर्ष आते–आते बहुजन समाज पार्टी ने उ0प्र0, पंजाब और मध्य प्रदेश में राज्यस्तरीय पार्टी की हैसियत बना ली और 1993 के सपा बसपा गठजोड़ के परिणाम स्वरूप पहली बार बसपा के विधायक मंत्री बने और मुलायम सिंह यादव मुख्यमंत्री।

उपसंहार

स्वतंत्र भारत के इतिहास में यह प्रथम अवसर था कि दलित शोषित समाज के लोग अपना राजनैतिक दल बनाकर अपने बलबूते पर चुन कर आये थे और मंत्री भी बने। मान्यवर काँशीराम ने वह कर दिखाया जिसका कल्पना महात्मा फूले, छत्रपति शाहू जी, पेरिमार रामा स्वामी और डॉ0 अम्बेडकर ने की थी। यहॉ से बहुजन समाज पार्टी का राजनीतिक सफर प्रारम्भ होता है जिसके प्रेरणता मान्यवर काँशीराम थे।

संदर्भ ग्रंथ

1. Kanshiram, The Chamcha Age, Published 24 Sept. 1982.
2. Narayan Badri, Kanshiram : Leader of the Dalit, Viking Penguin India.
3. Verma R.P., बहुजन नायक मान्यवर काँशीराम, Published by Shri Natraj Prakashan, Delhi-110053